अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah
(An Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary, Bilingual E-Journal)
ISSN: 3108-1541
Vol.2, Issue 1,Year 2025, pp 23-32
URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/
सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय
स्वर्ण जयन्ती वर्ष
2024-2025

कुम्भ मेले का सर्वआयामी परिप्रेक्ष्य:परम्परा,आधुनिकता एवं वैश्विक स्वरूप

शबनम बानो & डॉ. नीता साहू
* शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, एस०एस०खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, एस०एस०खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

सारांश

कुम्भ मेला विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन है, जिसकी ऐतिहासिकता सहस्त्र शताब्दी पुरानी है। यह आयोजन न केवल धार्मिक अनुष्ठान है बल्कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का बहुआयामी प्रतिबिम्ब है, जहाँ सामाजिक एकता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, धार्मिक सहिष्णुता राजनीतिक विमर्श एवं आर्थिक गतिविधियों जैसी उपयोगिताओं का समावेशन भी समाहित है। कुम्भ मेला भारतीय समाज का वह जीवंत पर्व है, जिसने स्थानीय से वैश्विक स्तर तक अपनी सांस्कृतिक पहचान को स्थापित किया है, यूनेस्को द्वारा इसे 'अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में मान्यता मिलना इस बात का प्रमाण भी है। इसमें सम्मिलित होने वाले विदेशी पर्यटक, करोडों श्रद्धालु, शोधकर्ता एवं मीडिया प्रतिनिधि इसकी वैश्विक छवि को सुदृढ़ करते हैं। वर्तमान समय में जन वैश्वीकरण एवं आधुनिकता ने जीवन मूल्यों को प्रभावित किया है, तब भी कुम्भ मेला अपनी परम्पराओं को संरक्षित रखते हुए आधुनिक तकनीक, प्रबंधन एवं प्रौद्यौगिकी, से

Article Publication:
Published online on: 30/12/2025

Corresponding Author:
शबनम बानो
शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, एस०एस०खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
Email: sbano0108@gmail.com

©S.S. Khanna Girls Degree College

Scan For Paper

सुसज्जित होकर विश्व के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। इस प्रकार यह मेला परम्परा और आधुनिकता के मध्य सेतु का मार्ग प्रशस्त करते हुए भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को ऊंचाईयों के शिखर पटल पर प्रज्जल्वित करने का प्रतीक बन चुका है।

मुख्य शब्द - *कुम्भ मेला, भारतीय परम्परा.संस्कृति, सामाजिक-आर्थिक उपयोगिता वैश्वीकरण, आध्यात्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पहचान, आधुनिकीकरण*

ऐतिहासिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य -

कुम्भ मेले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अत्यन्त प्राचीन है। इसका उल्लेख ‘‘मत्स्यपुराण’’ ‘‘भागवत पुराण’’, एवं ‘‘महाभारत’’ आदि संस्कृत ग्रन्थों मिलता है। माना जाता है कि समुद्र मंथन की कथानुसार अमृत की बूंदें पृथ्वी पर प्रयागराज (गंगा-यमुना संगम), हरिद्वार (गंगा तट), उज्जैन (क्षिप्रा तट), नासिक (गोदावरी तट पर गिरी थीं, जिनसे कुम्भ मेले की परम्परा जुड़ी है। मुगल और ब्रिटिश काल में भी इसका उल्लेख मिलता है। कुंभ पर्व की तिथियाँ सूर्य की स्थिति और संक्रांति के आधार पर निर्धारित होती है मकर संक्रांति, पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या, माघी पूर्णिमा, वसंत पंचमी आदि पर्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं। धार्मिक दृष्टि से कुम्भमेला आस्था और विश्वास का महासंगम है। साधु-संतों, अरवाडों और धार्मिक संगठनों का विशाल जमावडा इस पर्व की दिव्यता को और प्रकाशमय बनाता है। इस मेले की महत्ता सिर्फ धार्मिक या केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही उपयोगी नहीं है वरन् यह दोनों का सामंजस्य है। जहां एक ओर समुद्र मंथन की अमृत कथा से उत्पन्न यह परम्परा समय के साथ विकसित होकर एक विशाल सामाजिक- सांस्कृतिक उत्सव का रूप ले चुकी है। प्राचीन काल से प्रारम्भित यह मेला वर्तमान समय तक भारतीय समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है। वहीं दूसरी ओर यह मेला वैदिक मान्यताओं एवं धार्मिक अनुष्ठानों की निरंतरता को जीवनी शक्ति प्रदान करता है, यह श्रद्धालुओं एवं आमजनमानस को गंगा स्नान, दान एवं उपवास के माध्यम से मोक्ष की आशा देता है। इस प्रकार यह मेला ऐतिहासिक संस्कृति एवं परम्परा को जीवित रखते हुए धार्मिक सहिष्णुता एवं आध्यात्मिक शक्ति का संदेश देता है। यही कारण है कि इसे विश्व का सबसे बडा आध्यात्मिक समागम कहा जाता है और यूनेस्को द्वारा वर्ष 2017 में इस मेले को ‘अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर‘ के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य-

कुम्भ मेला भारत की सांस्कृतिक धरोहर का अद्वितीय प्रतीक है, जो कि आध्यात्मिक संवाद का मंच प्रदान करता है। सांस्कृतिक दृष्टि से कुम्भ मेला विभिन्न प्रांतों, भाषाओं, समूहों एवं परम्पराओं को एक सूत्र में पिरोने की भूमिका का निर्वहन करता है। यहाँ देश-प्रदेश की कला, लोकगीत, शिल्प कला शास्त्रीय नृत्य एवं अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को प्रोत्साहन मिलता है। यह आयोजन सिर्फ सांस्कृतिक चेतना का ही उत्सव नहीं है, वरन् आर्थिक परिप्रेक्ष्यता की महत्ता का भी संगम है। जहाँ पर्यटन, परिवहन, आवास, खान-पान एवं हस्तशिल्प द्वारा अरबों रूपये का आर्थिक प्रवाह होता है। स्थानीय कारीगरों, दुकानदारों एवं छोटे व्यापारियों को रोजगार एवं आमदनी के नए अवसर प्राप्त होते है। प्रयागराज महाकुम्भ2025 में इसकी व्यापकता की झलकियाँ स्पष्टतः परिलक्षित हुईं, जहाँ नाव चलाने वाले नाविक, बाइक-मोटरसाइकिल चालित विद्यार्थी, दातून बेचने वाले साधारण किसान आदि लोगों ने इस मेले के माध्यम से अपनी आमदनी में सुदृढ़ता लायी। आर्थिक दृष्टि से कुम्भ मेला स्थानीय व्यापार, पर्यटन और रोजगार के अवसरों को अभूतपूर्व गति प्रदान करता है। यह आयोजन स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा का संचार करता है तथा लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार हेतु मार्ग प्रशस्त करता है। कुम्भ का स्वरूप सिर्फ आस्था तक सीमित नहीं है बल्कि इसकी पहचान ‘‘वैश्विक बांड‘‘ के रूप में उभर कर सामने आ रही है, जहाँ जो व्यापार एवं निवेश के लिए नए पथ का सृजन कर रहा है, और इस प्रकार यह आयोजन आर्थिक संभवानाओं का प्रतीक बन गया है। इसी दृष्टिकोण के मद्देनजर ‘उत्तर प्रदेश सरकार‘‘ द्वारा ‘रोजगार महाकुम्भ‘‘ का आयोजन किया गया, जहाँ युवाओं एवं निवेशकों की आर्थिक प्रगति तो होगी ही वहीं इसके माध्यम से प्रदेश एवं राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए सशक्त आधार प्राप्त होंगें।

कुम्भ मेला भारतीय संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था का अद्वितीय संगम है, और इसमें किसी भी प्रकार की अतिश्योक्ति न होगी कि कुम्भ मेला, ‘भारत की जीवंत संस्कृति का वैश्विक उत्सव‘‘ है।

आध्यात्मिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य –

कुंभ मेले की आध्यात्मिक आस्था की महत्ता को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम न केवल ऐतिहासिक व साहित्यिक ग्रंथों का अध्ययन करें, बल्कि समकालीन लोक-अभिव्यक्तियों पर भी दृष्टि डालें। वर्तमान समय में सोशल मीडिया और जन-संवाद में अनेक कविताएँ व छंद प्रचलित हैं, जो मेले की आस्था और भव्यता को दर्शाते हैं। उदाहरण स्वरूप, एक अज्ञात कवि की यह पंक्तियाँ

"कुंभ में जो आया, वो भव सागर से तर गया,
संतों की वाणी सुन, उसका अंतर्मन हर गया।
गंगा का जल पीकर, तन-मन पावन हो गया,
आस्था का ऐसा मेला, देख, मंत्रमुग्ध जीवन हो गया।"

यह आयोजन आध्यात्मिक चेतना की अनुपम निधि है, परम्पराओं से जुड़े अनगनित प्रतीक, साधु संतों की श्रृंखलाएं और अखाड़ों की शोभयात्राएं इस आयोजन की प्राचीनता एवं आध्यात्मिकता को रेखांकित करती है। दूर-दराज क्षेत्रों से आए हुए ऋषि, महात्मा तथा आम जनमानस जिनमें बूढ़े, बच्चे सभी आयु वर्ग के लोग होते हैं, स्नान करने के लिए मीलों का सफर नंगे पाव करके पहुंचते हैं और यह उनकी दृढ़ आध्यात्मिक शक्ति का ही परिचायक है इस मेलावर्ती जीवन में धार्मिक प्रवचनों एवं उपदेशों के माध्यम से लोगों की अन्तः करण की शुद्धि तो होती ही है साथ ही आध्यात्मिक आत्मसंतुष्टि भी प्राप्त होती है। यह मेला श्रद्धा, आध्यात्म एवं सामाजिक एकता का अनोखा संगम है, यहाँ विभिन्न भाषाओं, जातियों एवं पंथों के लोग मिलकर सामुदायिक निर्माण एवं सामाजिक समरसता के मिसाल बनते हैं। बीते महाकुम्भ (प्रयागराज 2025) में सरकारी आंकडों के अनुसार, करोडों की भीड का आगमन हुआ, यद्यपि शासन और प्रशासन ने सुव्यवस्थित प्रबंधन किया, परन्तु इस विराट आयोजन की सफलता सरकारी प्रयासों से संभव नहीं थी। इसमें आम जनमानस की सक्रिय भागीदारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थानीय निवासियों द्वारा श्रद्धालुओं एवं तीर्थयात्रियों

के लिए अपने घरों के द्वारा खोलना, मंदिरों एवं मस्जिदों को विश्रामास्थल बनाया तथा निःस्वार्थ सेवा का परिचय दिया। यह परस्पर सहयोग एवं सद्भावना गंगा-जमुनी तहजीब का जीवंत उदाहरण है, जहाँ धर्म और जाति की सीमाएँ मिटकर केवल मानवता सर्वोपरि हो गई। कुम्भ मेले का सामाजिक आयाम इस तथ्य का द्योतक है कि भारतीय संस्कृति की स्थायित्व शक्ति उसके भीतर निहित बहुलता, सहिष्णुता और पारस्परिक सहयोग की परम्परा में निहित है।

कुम्भ मेला व वर्तमान परिदृश्य मे चुनौतियाँ-

कुम्भ मेले का महत्व जितना सामाजिक- सांस्कृतिक रूप से गहरा है, जो कि भारतीय परम्परा और आध्यात्मिक आस्था के संरक्षण में निहित है वहीं इसका प्रबंधकीय पक्ष आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक की उपलब्धियों से सुसज्जित दिखाई देता है। इस प्रकार के मेले का आयोजन एक विशाल एवं जटिल प्रक्रिया है, जिसमें कई तरह की चुनौतियाँ सामने आती हैं। इस आयोजन की वृहतता पर्यावरणीय, प्रशासनिक, सुरक्षा एवं लॉजिस्टिक संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न करती है-

* **पर्यावरणीय चिंताएँ**

आयोजन के दौरान और उसके बाद पवित्र नदियों को प्रदूषण से बचाया जाना महत्वपूर्ण है। करोड़ों तीर्थ यात्रियों के स्नान से नदियों में कचरा, साबुन, प्लास्टिक, अन्य प्रदूषक मिलते हैं। गंगा, यमुना आदि पावन नदियों के सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए इनकी जल की गुणवत्ता को बनाए रखना बड़ी चुनौती है.।

***प्रशासनिक एवं सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ**

जनसमूह प्रबंधन, नियंत्रण एवं उनकी सुरक्षा करना कठिन लक्ष्य होता है करोडों श्रद्धालुओं की आवाजाही को नियंत्रित कसा, भगदड जैसी संभावनाओं को रोकना । चुनौती केवल तीर्थयात्रियों की विशाल संख्या के नियन्त्रण एवं प्रबन्धन मात्र से ही नहीं है, वरन् विविध धार्मिक प्रथाओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न आयोजनों के सुव्यवस्थित रूपरेखा-निर्माण की भी है। चोरी, आतंकवादी गतिविधियाँ एवं अन्य असामाजिक खतरों से सुरक्षा करना एवं इन्हें रोकना कठिन कार्य होता है।

दुर्घटनाओं, बीमारियों और अन्य आकस्मिक स्थितियों में त्वरित स्वास्थ्य, चिकित्सा सुविधा एवं आपातकालीन सेवाओ का समुचित प्रबंध करना आवश्यक होता है।

***लॉजिस्टिक संबंधी चुनौतियाँ:**

लाखों-करोडों श्रद्धालुओं, देश-विदेश से आए हुए पर्यटक हजारों वाहनों की भीड़ से यातायात प्रभावित होता है, ट्रेफिक प्रबंधन सुनिश्चित करना एक चुनौती का कार्य होता है।

लाखों लोगों के आगमन के लिए अवसंरचना के निर्माण हेतु उपयुक्त योजना निर्माण एवं उनका त्वरित क्रियान्वयन आवश्यक होता है, अस्थायी आवास, शौचालय, परिवहन सुविधाएं एवं खाद्य वितरण के प्रयास ऐसे होने चाहिए, जो लाखो लोगों की सेवा करने में सक्षम हों।

तीर्थयात्रियों में सूचना का त्वरित संप्रेषण, मार्गो, गन्तव्य स्थान तक पहुंचने हेतु उचित दिशा-निर्देश उपलब्ध कराना चुनौतीपूर्ण होता है

महाकुंभ 2025 मे तकनीकी का समावेशन

- ❖ गंगा व यमुना की धारा गुणवत्ता हेत विशेष जल-शोधन संयंत्र लगाए गए। संसर्स नदी तटों पर लगाए गए, जो संभावित प्रदूषण का पता लगाकर पवित्र नदियों की शुद्धता में सहायक होते हैं।
- ❖ कचरा प्रबंधन प्रणाली के अंतर्गत अस्थायी डस्टबिन, कचरा संग्रहण वाहन एवं अपशिष्ट निस्तारण केन्द्र स्थापित किए जाते है जहाँ अपशिष्ट के पृथक्करण, पुनः चक्रण की व्यवस्था की जाती है।
- ❖ कुम्भ मेले में प्लास्टिक और पॉलिथीन पर प्रतिबंध के प्रयोग पर रोक लगाई गई है तथा इको-फ्रेंडली सामग्री के उपयोग को बढ़ावा दिया जाता है।
- ❖ सुरक्षा एवं प्रशासनिक स्तर पर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित कैमरे, ड्रोन निगरानी तथा केन्द्रीकृत कंट्रोल रूम की व्यवस्था की जाती है गई, जिससे भीड़ की वास्तविक समय में निगरानी की जा सके।
- ❖ चेहरा पहचान प्रणाली, उन्नत बायोमेट्रिक प्रणाली का उपयोग सुरक्षा को तो बेहतर बनाता ही है, साथ ही गुम हुए, पिछडे लोगों का पता लगाने में भी शीघ्रतम कार्यवाही हेतु मददगार साबित होता है।

- ❖ लाखो तीर्थयात्रियों की सुरक्षा हेतु अतिरिक्त पुलिस बल पैरामिलिट्री फोर्स और क्विक रेस्पॉन्स टीम की तैनाती की जाती है।
- ❖ आकस्मिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अस्थायी अस्पताल, मोवाइल एम्बुलेंस एवं स्वास्थ्य शिविर (24Û7) उपलब्ध कराए जाते हैं।
- ❖ लॉजिस्टिक स्तर पर यातायात नियंत्रण हेतु डापवर्जन प्लान, पार्किंग स्थल एवं शटल बस सेवाएं की व्यवस्था की जाती है
- ❖ डिजिटल सूचना प्रणाली के तहत मोबाइल एप, डिजिटल बोर्ड और पब्लिक एनाउंसमेंट सिस्टम के माध्यम से मार्गदर्शन व सूचना प्रसारित करने का इंतजाम किया जाता है।
- ❖ अस्थायी टेंट सिटी, स्मार्ट टॉयलेट, का निर्माण किया जाता है। स्वयंसेवकों और सामाजिक संगठनों द्वारा पेयजल स्टॉल, भोजनालप पंडाल, लंगर जैसी व्यवस्था ने मेले क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं एवं आवासीय प्रबंधन को सहज बनाया।
- ❖ इस प्रकार कुम्भ मेला जहाँ परम्परा और आस्था का महान उत्सव है, वहीं सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था तथा उन्नत तकनीक एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने इस आयोजन को आधुनिकता की श्रेणी के उच्चत्तम शिखर पर विराजमान किया है।

कुम्भ मेला एवं वैश्विक स्वरूप-

बीते कुछ दशकों में कुम्भ मेले का स्वरूप स्थानीय या राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक वैश्विक सांस्कृतिक महासम्मेल के रूप में स्थापित हो चुका है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक धरोहर संगठन (यूनेस्को) द्वारा इसे मानवता की ‘‘अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता मिलना इसके वैश्विक महत्व को स्पष्ट करता है। हाल ही में सम्पन्न हुए महाकुम्भ 2025, जो कि प्रयागराज में आयोजित हुआ, उसके सन्दर्भ में दुनियाभर के मीडिया ने इस उत्सव को ‘संयुक्त राष्ट्र की आधी आबादी जितनी भीड‘‘ जैसे शीर्षक देकर सराहा - द वॉल स्ट्रीट जर्नल ने लिखा कि इस आयोजन ने अमेरिका की पूरी जनसंख्या से भी ज्यादा लोग एकत्रित किये (इण्डिया टुडे,

हिन्दुस्तान टाइम्स, द हिन्दू)।महाकुंभ-2025 पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक शोध चल रहे हैं। हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड, MIT, कोलंबिया जैसी विश्व की प्रमुख यूनिवर्सिटियाँ इसके प्रबंधन, पर्यावरण, यातायात और सामाजिक प्रभाव पर अध्ययन कर रही हैं। भारत में लखनऊ विश्वविद्यालय ने Workforce Strategic Planning and Operations for Effective Organisation of Maha Kumbh 2025 सहित कई परियोजनाएँ शुरू की हैं। साथ ही प्रयागराज में Kumbh Research Centre की स्थापना की गई है ताकि कुंभ से जुड़े स्थायी शोध कार्य आगे बढ़ाए जा सकें।

जब भी कुम्भ मेले का आयोजन, अर्द्धकुम्भ, महाकुम्भ या फिर हर वर्ष लगने वाले कुम्भ के सन्दर्भ में किया जाता है, तब भी सदैव ही विदेशों से आए पर्यटकों एवं आंगतुकों ने इसकी शोभा को बढ़ाया है। विश्वभर के राजनेता, अभिनेता, कूटनीतिक व्यक्तियों का महासंगम भी इस मेले में सम्मिलित होता है, जिससे यह वैश्विक राजनीतिक विमर्श, सामुदायिक संवाद एवं 'सॉफ्ट पावर' का प्रतीक बन गया है। विदेशी मीडिया, अन्तराष्ट्रीय शोध संस्थानों की उपस्थिति एवं 'स्पिरिचुअल टूरिज्म'' और ''कल्चरल डिप्लोमेसी'' की परिप्रेक्ष्यता ने इस आयोजन को वैश्विक स्तर पर एक विशेष पहचान के रूप में इंगित किया है।

इस प्रकार यह महोत्सव भारतीय सभ्यता की बहुलता सहिष्णुता एवं आध्यात्मिक परंपरा का वैश्विक प्रदर्शन है। अन्तराष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार के आयोजन द्वारा आत्मीयता, मानवता एवं सांस्कृतिक सह-अस्तित्व के आदर्श रूप का संदेश उजागर किया जाता है।

निष्कर्ष

कुम्भ मेला केवल धार्मिक अनुष्ठान का केन्द्र ही नहीं है, वरन् भारतीय पौराणिक और सांस्कृतिक परम्परा में गहनता से समाहित हैय यह एक सामाजिक सांस्कृतिक परिघटना है। इस अवसर पर लाखों तीर्थयात्रियों, संतों, योगियों एवं आगंतुकों का आगमन, जो कि विभिन्न क्षेत्रों एवं परम्पराओं से एकत्र होकर विशाल सांस्कृतिक संगम का निर्माण करते हैं। इस महोत्सव की महत्ता इस प्राचीन परम्परा में निहित है, जहाँ विश्वास किया जाता है कि विशिष्ट अवसरो पर

पवित्र नदियों में स्नान करने से आत्मिक शुद्धि एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रकार कुम्भ मेला जीवन, मृत्यु और पुर्नजन्म की चक्रीय प्रक्रिया का प्रतीक है, जो हिन्दू धर्म के मौलिक विश्वासों तथा मोक्ष की खोज की पुष्टि करता है। इस अवसर पर दूर-दराज प्रांतों,विभिन्न समुदाय के लोग एक समान भाव से मिलते हैं. जिससे समानता, सहयोग और भाईचारे की भावना को बल मिलता है। यह आयोजन समाज में धार्मिक सहिष्णुता, आध्यात्मिक उन्नति एवं नैतिक मूल्यों को पुर्नस्थापित करता है। कुम्भ मेला अन्तराष्ट्रीय छवि निर्माण में अग्रणीय भूमिका अदा करता है, जहाँ विदेशी विद्वान एवं यात्री इसे भारत की सांस्कृतिक शक्ति एवं आर्थिक संभावनाओं से जोड़कर देखते हैं। जहाँ एक ओर यह मेला आध्यात्मिक एवं वैदिक मान्यताओं की निरंतरता को जीवंत करता है, वहीं दूसरी ओर प्रशासनिक प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी और वैश्विक भागीदारी इसे आधुनिक संदर्भों से जोड़ते हैं।

अतः कुम्भ मेला ‘‘वसुधैव कुटुम्बकम्‘ की भावना का सही अर्थों में निर्वहन करता है एवं इसके सर्वआयामी अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, यह मेला परम्परा, आधुनिकता एवं वैश्विक स्वरूप के अद्वितीय सामंजस्य का प्रतीक बनकर उभर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- महाकुम्भ 2025. अत्याधुनिक तकनीक और प्राचीन अनुष्ठानों का संगम
- https://www.thehindu.com/news/india
- https://www.drishtii
- महाकुम्भ : आस्था एवं संस्कृति का संगम
- चोपड़ा ,डी.(2023).भारत मे कुम्भ ,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत
- सिंह ,ए.(2022).कुम्भ का इतिहास और इसकी महत्ता का अधय्यन,इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च पब्लिकेशन एण्ड सेमिनार,वॉल्यूम13(1)
- कनौजिया,ए.एवं तिवारी,वी.(2021).कुंभ मेले में स्वच्छता प्रबंधन की बदलती अवधारणा और आगे की चुनौतियाँ इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च (आईजेएसआर) 10(10):751-758

- चतुर्वेदी ,एच.(2019).कुम्भः इतिहासिक वाङ्कमय,वाणी प्रकाशन।
- चतुर्वेदी, एस.(2019).कुम्भःआस्था का प्रतीक,प्रभात प्रकाशन।
- कुम्भ मेले मे स्नान के लिए गंगा पानी की स्वक्षता को लेकर क्या है विवाद (बी.बी.सी.न्यूज)।
- कामा मैकलिनःतीर्थ यात्रा और शक्ति इलाहाबाद मे कुम्भ मेला 1756 से 1954 तक।
- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ,भारत सरकार।